एक कोशीय जीवाणु

चित्रः आमोद कारखानिस

सोने का हार बनाते हुए अक्सर इस तरीके का इस्तेमाल होता है ताकि कम-से-कम टांके इस्तेमाल हों और हार 'शुद्ध' सोने का बना रहे। ऊपर बने चित्र में आठ जीवाणुओं को जोड़कर यह तरीका दर्शाया है। इसी तरह इसमें जितने चाहे छल्ले जोड़े जा सकते हैं। अगर इनमें से एक भी छल्ले/जीवाणु को हटा दिया जाए तो शेष सब एक दूसरे से स्वतंत्र हो जाते हैं।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि दो छल्ले सियामीज़ जुड़वां की तरह वृद्धि करते हैं। साथ के चित्र में ऐसे दो स्वरूपों को दिखाया गया है। पहले में सियामीज़ होते हुए भी दोनों स्वतंत्र हैं, दूसरे में ये सियामीज़ एक-दूसरे में फंसे हुए हैं।

अब दूसरा सवाल है कि क्या ये दोनों स्वरूप टोपोलॉजिकल दृष्टि से एक समान हैं? मान लीजिए ये सतहें बहुत ही महीन रबर से बनी हैं जिसे खींचा जा सकता है, सिकोड़ा जा सकता है, मरोड़ा जा सकता है -- यह ध्यान में रखते हुए कि हम उसे कहीं से भी काट नहीं सकते, तोड़ नहीं सकते; आपको सोचना यह है कि ऐसा सब करके एक स्वरूप को दूसरे में बदला जा सकता है क्या?

भागः 3 देखिए पृष्ठ क्रमांक 84 पर।
भागः 1 पृष्ठ क्रमांक 24 पर